सरहद को प्रणाम

दिनांक : १९-११-२०१२ से २३-११-२०१२

FiNS : forum for Integrated National securities

FINS एक परिचय

- सरहद को प्रणाम क्यो ?
- रुपरेखा - कार्यक्रम
- हमारी मुसाफरी
- आधार शिबिर
- हमारी सीमा की स्थिति
- सीमा के गार्व - वहां के लोग
- हमारे जवान
- अनुभव - अलग - अलग दलो से

• FINS

फोरम कोर इन्टिग्रेटेड नेशनल सीक्युरिटीस - २००८ मे स्थापित इस संस्था का मुख्य लक्ष्य देश की राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थ व्यवस्था, आंतरराष्टीय संबंध एसे विषयो की चिंता एवं चिंतन करने का है। यह संस्था ज्यादा भारतीय नौ जवानो को उत्साहित करके भारत का ही विकास करने का कार्य कर रही है। इस संस्था मे सुरक्षा, न्याय संबंधी लोग, इन्टेलिजन्स एवं कानून और शिक्षण के साथ जुडे हुए लोग है। एफ.आई.एन.एस. के अध्यक्ष (राष्ट्रीय) लेफ. जनरल डी. बी. शेकतकर (पीयुएसएम, एयुएसएम, वीएसएम) और जो. सेक्रेटरी कर्नल महेश गांधी और डॉ. श्रीमति उषा किरण राय है। और भी ज्युडीशरी और कानून एवं निवृत्त आई.ए.एस., आई.पी.एस. अफसर सामील है। देश के नौ जवान इस देश के बारे में और देश की परिस्थितिओं के बारे में परिचित हो ऐसा हरदम एफ.आई.एन.एस. के द्वारा वैविध्य कार्यक्रम का आयोजन होता रहता है। उन्हीं कार्यक्रमो में से एक कार्यक्रम है।

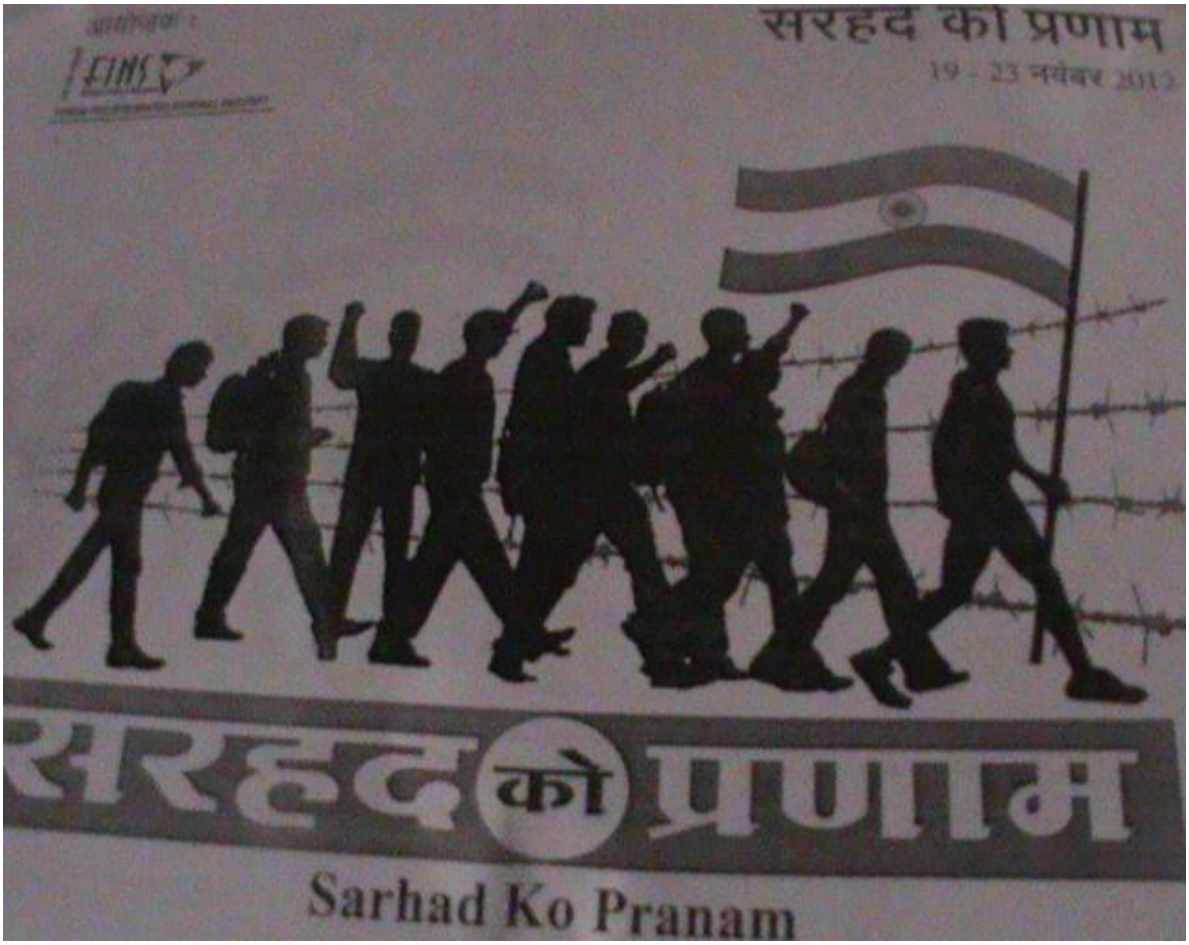

सरहद को प्रणाम् ।

हमारे भारत के लोको को देश के सडको के बारे में पता है । रेलवे, मल्टीप्लेक्ष, डीस्को यहां के बारे में पता है । देश के समुद्र के बारे में पता है, लैकिन देश की थल सीमा के बारे में कितना पता है ? लोग कश्मीर घुमते है, हरे भरे जंगलो से विविध प्रदेश घुमते है, विज्ञान के लिएं घुमते है, लैकिन बहोत ही कम लोग है जो सरहद को चुमने के लिए घुमते है । जिस सरहद से हमारी आंतरीक सुरक्षा हो रही है कभी ऐसी सरहद को देखना चाहिए और ऐसी सरहदो की सुरक्षा जीस लोगो के पास है, ऐसे हमारे सीमा सुरक्षा दल के जवानो को मीलकर कभी उनसे भी बात करनी चाहीए । भारत युवा देश है और इस युवा देश के ज्यादातर युवा इस देश की सरहद के बारे में सरहद के गार्व, गार्व के लोग, हमारे जवानो, वहां की परिस्थितियां इन सबके बारे में जाने । इसलिए एफ.आई.एन.एस. के द्वारा आयादीन इस कार्यक्रम में पूरे भारत का आंतरराष्ट्रीय थल सीमा के चुमने के लिएं भारत के सभी प्रांतो से कुल १२,००० युवा लोको को सरहद की मुलाकात ली ।

हमारी आंतरराष्ट्रीय सरहद १५,००० कि.मी. है । पूरे उत्तर - पूर्व में कुल मिलाकर । और दक्षिण आसाम में यानी त्रिपुरा और आसाम में २४, प्रदेशो से कुल ४०० लोग आये थे ।

● रुपरेखा

पुरे भारत की अलग-अलग सीमा पर दिनांक १९-११-२०१२ से २३-११-२०१२ तक सीमा की परिस्थिति का अभ्यास करना था । अलग - अलग चौकी पर जाने के लिएं अलग - अलग आधार शिबिर थी । हमारी पश्चिम त्रिपुरा में अगरतला में सेवाधाम पर आधार शिबिर थी । २३को हमारी प्रेसमीट थी । ये रुपरेखा पूरे भारत में समान थी ।

● हमारी मुसाफरी

ओखा - घुवाहाटी (द्वारका एक्सप्रेस) से गांधीनगर, सुरेन्द्रनगर, साबरकांठा, भरूच, बडोदा से कुल मिलाकर एम २६ लोग थे । अलग-अलग स्थान से सभी लोग बेठ रहे थे । राजस्थान, यु.पी., बिहार, मेरठ अलग-अलग प्रांत से एफ.आई.एन.एस. के लोग इसी रैलगाडी में बेठ रहे थै । सब लोग गुवाहाटी तक थै । वहां से कुछ लोग शिलोंग और हम सब त्रिपुरा की और आगे बढे । ट्रेन में बहोत सारे प्रदेशो के लोगो की मुलाकात होती रही । बहोत ही सुंदर जंगलो, पहाडी, नदीया, अद्भुत वातावरण से हम् लोग पसार हो रहे थे । गुवाहाटी से तीन से चार घंटे का रास्ता है लाम्बीडींग तक । आसाम के जंगलो का द्रश्य दृश्यमान हो रहा

था और फीर रात को हमारी ट्रेन थी लाम्बडींग से अगरतला तक, यै ४१२ कि.मी. का अंतर है। लेकीन लगभग २५ घंटे लगते है।

झाड-पान से गाढ जंगल, मीटर गेज ट्रेन, सर्पाकार रास्ते और करीबन दो से तीन कि.मी. लंबी टनल (बुगदा) से ये ट्रेन गुजरती है ये अद्भुत ऐडवेंचर था जो महेसुस करने से मजा आता है। चांय के बगीचे, कैल के जंगल, बास के जंगल ऐवं अद्भुत सैदये से भरा रास्ता था। दुसरे दीन हम लौग अगरतला के योगेन्द्र नगर पर पहूचे और वहीं से हम बस के द्वारा पहुचें आधार शिबिर।

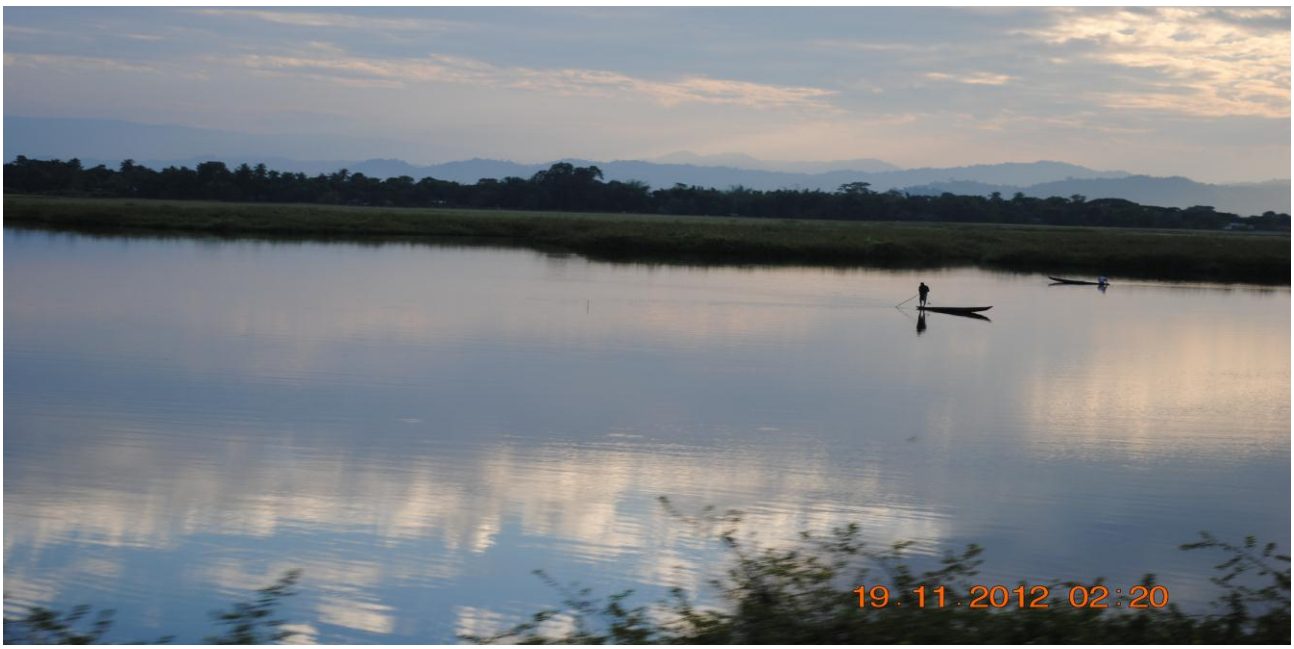

18.11.2012 03:17

● आधार शिबिर

पश्चिम - त्रिपुरा में त्रिपुरा प्रांत की राजधानी अगरतला में सेवाधाम में हमारा आधार शिबिर था । पहले दिन से हमारा अलग-अलग दल बना दिया । और एक दल में करीबन पांच-छ प्रदेशो के लोग थै । हमारे दल का दल प्रमुख प्रो. ए. गणेश थे । जो आंध्रप्रदेश के थे । हमारे पास कुल मिलाकर १५ यात्री थे । जिसमें हम लोग बीशलगर चोकी पर जानेवाले थे । जो प. त्रिपुरा में शपंजीला में थी ।

● हमारे देश की सीमा

बीशलगर में कमथाना से पुट्टिया गार्व की और हमारे दल ने प्रयाण किया । जाते ही बी.एस.एफ. के जवान से बात-चीत वगेरे किया । भारत की सीमा पर फेन्सिग है । लैकिन बांग्लादेश की सीमा पर कुछ नहीं है । २००८ में जब फेन्सिग बनी तो फेन्सिग के भीतर हमारे लोगो के खेत - जमीन वगेरे है । थोडे थोडे अंतर पर फेन्सिग में बीच दरवाजा भी है, जीनकी चाबी सीमा सुरक्षा बल के ओफिस में रहती है । जो किसान उस तरफ खेती करना चाहता है, उनका एक आई.डी. कार्ड होता है । उस कार्ड से वो जा सकता है और शाम को बताये गये

वक्त पर वापस आ जाना पडता है और दरवाजा बंध हो जाता है । कभी फेन्सिग से १५०-२०० मीटर दुर बांग्लादेश बोर्डर है । उसी जगह से ५००-७०० मीटर दुर है । फेन्सिग की उंचाई कुछ जगह बहोत लंबी है और कुछ जगह बहोत नीची है । कुल मीलाकर सीमा में शांति है । लेकिन फिर भी घूसणखोरी की समस्या है ।

बांग्लादेश की घूसणखोरी

१९७१ में भारत - पाकिस्तान युद्ध के दौरान पूर्व पाकिस्तान का नया जन्म हुआ । बांग्लादेश नाम के एक मुस्लिम राष्ट्र का, उस वक्त का वडाप्रधान माननीय श्रीमती इन्दिरा गांधीने पूर्व पाकिस्तान को बंगाल में विभीन कर दिया होता तो आतंकवादीओ से भरपुर उपने में से ही पेदा हुआ बांग्लादेश नाम का कोइ राष्ट्र नहीं होता । पूर्व भारत में बहोत जगह बांग्लादेश की सीमा आती है । प. बंगाल, आसाम, त्रिपुरा, मिझोरम, मेघालय इस सभी प्रदेशो में बांग्लादेश की सीमा आती है ।

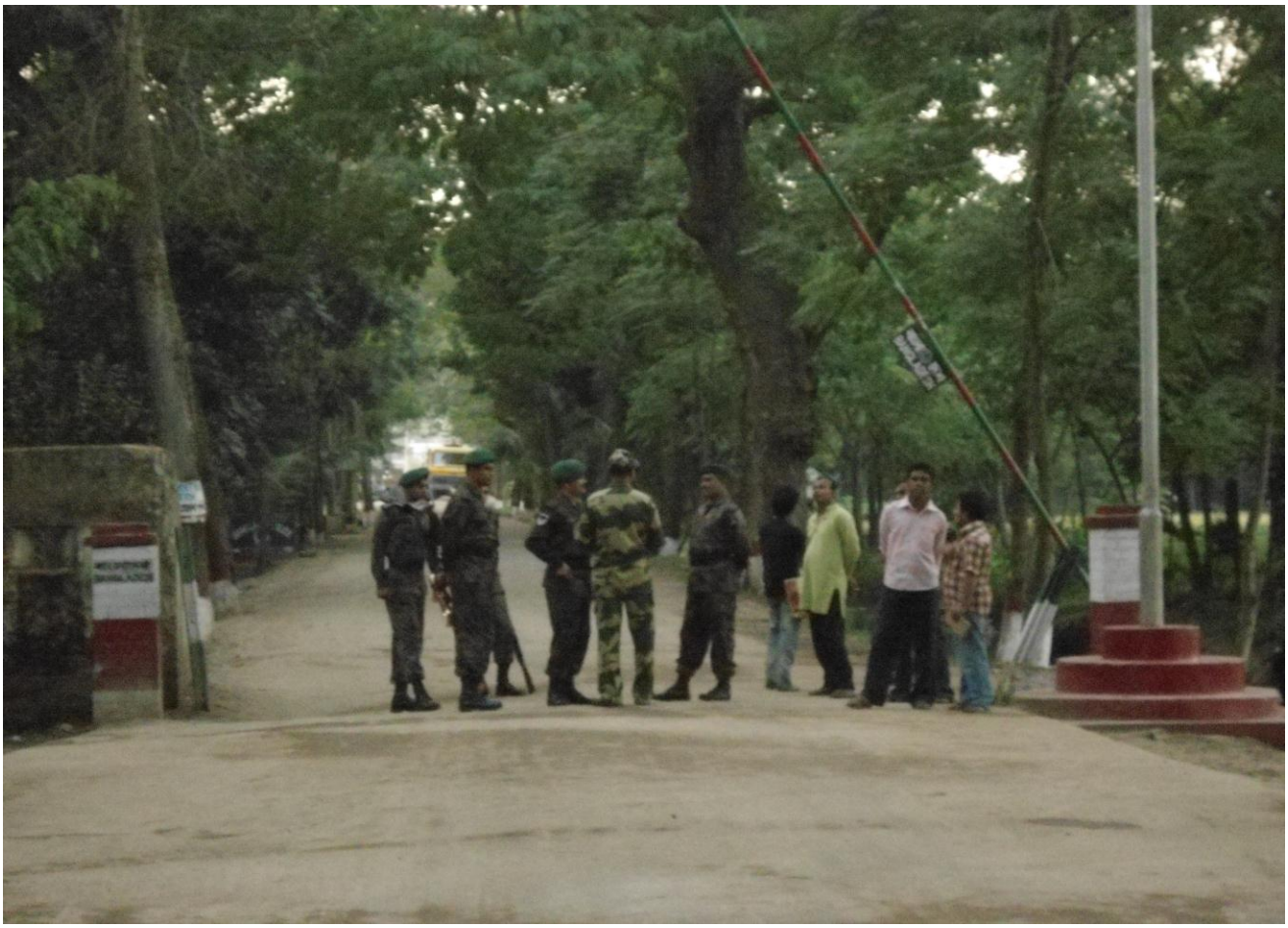

बी.एस.एफ. के जवान के उपर बहोत ही राजनैतिक दबाव है, अगर कोई घूसपेढियां मालूम पडता है तो उस को पकडकर स्थानिक पुलीस कों भेज देती है। सीधा प्रतिक्रिया (ऐकशन) लेने का पावर बी.एस.एफ. के पास नहीं है। गुवाहाटी आते समय करीमगंज नाम का एक गार्व है जहां ज्यादातर मुस्लिम वस्ती है। और वहां से बांग्लादेश २०-२५ रुपिया में जा सकते है। कुछ जगह फेन्सिग भी नहीं है।

करीमगंज, होमाकांधी, कछार ये तीन जील्लो को बराकवेली बोलते है, जीन को मीनी बांग्लादेश कर्हां जाता है । हम सोच सकते है की कीतना सेन्सेटीव एरिया आता है ।

कुल मीलाकर थोडे जगह पर शांतिपूर्ण माहोल है और कुछ जगह समस्या है । हमारे राजस्थान और दूसरे प्रांत का एक दल करीमगंज से आगे के विस्तार की चौकी पर गये थे और उनका वापसी आने के बाद एक घंटे में कुछ फायरींग हुई और चार-पांच लोग मारे गये । फेन्सिग है वो नीची है कुछ जगह तो वही से आसानी से बांग्लादेशी आ जाते है । जवान की चौकी है लेकीन एक चौकी पर ऐक जवान बैठता है और आंगे पीछे २ कि.मी. तक कोई नहीं है । तो कभी पेट्रोलींग के दौरान कोई घूसपेढीयां आने की संभावना है । फेन्सिग के बीच कुछ जगह दरवाजा होता है और उनकी चाबी जवान के पास होती है । जीस खेडूत को खेत फेन्सिग के अंदर है वो उस दरवाजे से जां सकते है और उनके पास नीले रंग का एक आई डी कार्ड होता है और वो जवान को देकर अंदर जा सकता है । अपना काम पूरा करके ४ बजे तक वापस आ जाना पडता है । इसी दौरान कभी बांग्लादेशी आते है और अपने लोगो का पाक वगेरे ले जाते है । कभी

लडकी के साथ जबरदस्ती भी करते है । कुछ जगह नशीली दवाईयो का भी आवागमन होता है । हमारी मुलाकात कमला सागर के एक परिवार से हुई भी तो उस औरत ने बताया की १५-२० दीन पहेले यहां १०-१२ बुकानीधारी बांग्लादेशी आये थै और हमारे पैसे - जवेरात ले गये । कोई मर्द घर पर नहीं थै । वो लोग गरीबी की वजह से लूंट कर चले जाते है । औरत को ज्यादा परेशान नहीं करतै ।

● सीमा के गार्व वहां के लोग

वैसे त्रिपुरा के लोग बहोत ही अच्छे है । बहोत ही भावुक लोग है । गार्व की मुलाकात के दौरान हमारे साथ स्थानिक कुछ मार्गदर्शक थै, जो हमारी हिन्दी भाषा का बांग्ला में परिवर्तन करते थै । ज्यादातर लोग बांगला ही बोलते है । और कुछ लोग हिन्दी भी नहीं समजते, वहां के लोगो के घर बास के या मीट्टी के होते है, लैकिन उनकी कला को प्रणाम करता हूं । मीट्टी का घर भी अद्भुत होता है । सीमा का विस्तार पहाडी है, तो वहां तालाब नहीं होता है । कम होता है । बाकी शहर में सभी घरों में आगे तालाब रहता है और उन का स्नान वगेरे इसी में रहता है । वहां के लोगो में स्वच्छता बहोत ही है । छोटा घर हो सीमा पर लैकिन सभी घरो में शौचालय का अलग स्थान बना हुआ रहता है । घर

में आंगन में स्वच्छता बहोत ही रहती है । रब्बर, चांय, डांगर, सुपारी, तेल, इन सब की खेती ज्यादा है । मुख्य खोराक वहाँ को, भात-मछली, मटन है । एक अद्भुत वातावरण में रहने की मजा ही कुछ और है ।

सीमा के गार्व में भी टीवी है, वीडीयोकोन की डीश है, बीजकी की कभी समस्या रहती है । बांकी बीजली मिलती रहती है । हम लोगोने कमथाना गार्व से पुटिया और

कमलासागर गार्वं की मुलाकात ली थी । पुटिया गार्वं की ग्राम पंचायत, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पाठशाळा की मुलाात की थी ।

दूसरे दीन कमलासागर गार्वं में झीरो लाईन तक गये थे । इस गार्वं में माताजी का बडा मंदिर है और बहोत ही बडा तालाब है । उस तालाब का आधा हिस्सा भारत में है । उसके बाद फेन्सिग है । फीर बांग्लादेश की रेलवे ट्रेक है और आधा तालाब बांग्लादेश में है । उनकी ट्रेन गुजरती है । हम देख सकते है । उनका रेलवे स्टेशन नजदीक है । तो वहां की सूचनाए हम सुन सकते है । नमाज अदा करता है कोई तो वो भी हम सुन सकते है । हमारे पास राखी (रक्षासुत्र) थे । और ये जवान और गार्वं के लोगो को बांधना था । सीमा के लोग गरीब हो या कोई भी हो सभी के घर के लडका या लडकी पढता है । कई तीन कीमी दूर सायकल पर कोई पैदल पहाडी विस्तार में सायकल चलाना मुश्किल है । सीमा के कुछ गार्व के लडके भी फौज में है । उनकी आमदानी नहीं है । फीर भी वो लोग खुश है । पर सीकायत भी है । जीतनी सुविधा मीलनी चाहीए उतनी सरकार से नहीं मीलती है ।

সবাই পড়ু সবাই এগিয়ে যাও

हमारे जवान

दोस्तो हम अपने परिवार के साथ खाना खाते है । मंदिर जाते है । सिनेमा देखते है । जिंदगी में खुश रहेने के लिए वो सब करते है जो जरूरी है । क्योंकि कोई मां का लाल, एक बहन का भाई, एक पिता का बेटा, एक पत्नि का पति और कोइ बच्चे का बाप सिना तान के दिन रात सारे भौतिक सुख को भुलाते हमारे देश की सीमा पर खडा है । तांकी कोई बदमाश हमारी मां भारती को छू ना शके और ये है हमारे हिन्दुस्तान का सीमा सुरक्षा बल या आर्मी का जवान ।

दौ मिनिट सोचीये १ घंटे आपका इसी ऐसी जगह बेठाया है की वहाँ कोई आता नहीं और आप अकेले है, एक गन है । बाकी कुछ नहीं सोचीये क्यां होता है और ये जवान १२ घंटे तक ऐसी जगह अपना फर्ज निभाता है । क्योंकि हम चैन से सो सके । हमारे देश में खानगी या सरकारी नोकरी में केवल ८ घंटे की ड्यटी होती है । हमारे जवान की ड्यटी १२ घंटे की होती है । बहोत जवान को हम मीले कोई मध्य भारत से कोई उत्तर से, कोई पश्चिम से, दक्षिण से अलग अलग प्रदेश से सब थे । कोइ ३० साल, कोई ४० साल कोई तीन महिने में निवृत्त हो रहा है । एक जवान को पूछा की कीतने साल हुए भरती में तो कहां २ साल और उनकी उंमर थी २१ साल १९ साल की उर्म में वो सीमा की ड्यूटी में आ गया था ।

जवान पर बहोत ही राजनैतिक जबाव है । हमारे इस कार्यक्रम से वो लोग बहोत ही खुश थे की कोई है जो हमे मीलने इतने दूरी से आया है । हमारा एक परिवार आया है । इतनी खुशी उन जवानो को थी । हमारे कुछ दल का निवास भी बी.एस.एफ. के केम्प में हुआ था । हमारे साथ बैठकर बहोत सारी बाते की । दोस्तो आप दूनिया घूमो अमेरिका, बंडन, युरोप लेकीन जीनकी वजह से आप और आपका परिवार सुरक्षित है ऐसे हमारे देश के जवानो को भी कभी मीलो, कच्छ सीमा, वाघा बोर्डर, जहां भी आपको लगे उस सीमा पर कभी जाईए । सीमा देखीए और हमारे जवान को भी मीलीए । सलाम है इन जवान को जो खडे है । उस सीमा पर और उस सरहद को प्रणाम है । जो हमारे देश की रक्षा कर रही है । मुझे वो गीत याद आता है ...

सरहद तूझे प्रणाम, देश की रक्षा धर्म हमारा, देश की सेवा कर्म हमारा

अनुभव

बहोत ही रोमाचंक अनुभव मीला है । हमारी १२ चौकी पर जाने के लिए १२ दल थे । कुछ अनुभव कहना चाहुंगा । वहां के लोगो में सरकार से नाराजगी ज्यादा है । क्योंकि जैसे हमारे प्रदेश दिल्ली से, मीडीया से और पूरे देश के साथ जीस तरह संपर्क में है उसी तरह वर्गा लाईव, पोलीटिकल, मीडीया, सामाजिक संपर्क कम है । इस लिए वहाँ की समस्या लोगो तक कम पहोंचती है । ट्रेन सुविधा, विमान सुविधा, वहाँ त्रिपुरा में बांग्ला लोग ज्यादा है । तो उन लोगो का ज्यादातर संपर्क मिलता है । तो परिस्थिति अच्छी नहीं होने पर भी विमान सेवा का सहयोग लेना पडता है । ट्रेन में २-३ दिन लग जाते है । वहाँ अगर खेतीवाडी में ध्यान दीया जाए तो बहोत ही भारी मात्रा में उद्योग - विकास संभव है । वहाँ के लोग इमानदार है । खाश तौर पर मणीपुर के लोगो में इमानदारी ज्यादा है । इसलिए कोई उनके साथ बेइमानी करे तो वो लोग छोडेंगे नहीं । वहाँ स्त्रीप्रधान लोग है । स्त्री को बडा आदर करते है । रात को अकेला मर्द निकला तो परेशान करेगा लेकीन औरत साथ में है तो कोई दीक्कत नहीं है । इस वजह से वहाँ बलात्कार जैसी घटनाऐं भी नहीं होती है

।

हम देश दुनिया घूमते है । कभी सीमा भी देखकर अपने जवानो की भी समझना चाहीएं । उग्रवाद की समस्या पहले से कम है ।

BORDER PATROL
MARUTI
TR 01N 0442

22.11.2012 10:54

माओवादी की समस्या मणीपुर के कुछ हिस्से में है । मीझोरम में है । बाकी छोटा-मोटा संगठन रहता है और बाकी लोगो को सरकारने सीझ फायर कर दीया है । लेकीन बांग्लादेश की घूसपेढीयां की समस्या है । इसीलिए वहाँ हमारे भारतीय लोगो को तकलीफ होती है । कुछ विस्तार में भारतीय से ज्यादा बांग्लादेशी है । सरकार की वोट बेंक की राजनीती की वजह से यै समस्या बढती ही जाती है । आसाम और दूसरे विस्तार में ८०० प्रकार की आदीवासी जाती है और करीब २०० से अधीक जातीयां वसवाट करती है । उत्तर - पूर्व विस्तार की पहाडी और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव अवश्य करना चाहीएं । वहां लोग और वहाँ का मोसम बहोत अच्छा है । कम से कम एक बार उत्तर - पूर्व भारत जाना चाहीएं । अद्भुत सौंदर्य से भरा प्रदेश है और एक बार उस सीमा को देखना चाहीएं जो हमारी रक्षा कर रहे है ।

जय हिन्द ...

वंदे भारत मातरम् ...

भारत माता की जय ...

रीपोर्ट : : आशिष एच. काचा

गांधीनगर, गुजरात

More Details : www.aashishkacha.com , **www.fins.org**